NotNul
पढ़ना ही जिसकी है

इतिहास का पिछला दरवाज़ा

इतिहास और इतिहास लेखन विषयक चिंतन

इतिहास दर्शन
इतिहास लेखन
सभ्यता और विचार
इतिहास की पद्धतियाँ
स्रोत, साक्ष्य और व्याख्या
मानव अतीत की कहानियाँ

चर्चित अमेरिकी इतिहासकार
ऑड्रे दुशके
के ख़ास इंटरव्यु सहित

दुष्यंत

इतिहास का पिछला दरवाज़ा

इतिहास और इतिहास लेखन विषयक चिंतन

चर्चित अमेरिकी इतिहासकार ऑड्रे ट्रुशके के ख़ास इंटरव्यू सहित

दुष्यंत

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2026

© दुष्यंत

अनुक्रम

भूमिका	3
इतिहास की लोकप्रियता का स्वर्णयुग !	4
अतीत की गलियों में हुजूर संभलकर चलिए	8
हमारी उड़ानें पुरखों के दिए पंखों से हैं	12
कविता की नदी में इतिहास की नाव	17
तथ्यों का सूना पनघट और घर -घर मैला पानी	22
काला चश्मा और धुंधली नजर के पार एक किताबी दुनिया	27
हमारे पुरखों की पगडंडियों में धूल और फूल	31
कोविड 2.0 में गांधी होते तो क्या करते, क्या न करते?	36
सौ साल सिंधु सभ्यता के पुनर्जन्म के	41
वाजिद अली शाह की वाजिब विरासत	45
हमारी राजधानी फिर से कोलकाता में हो जाए!	50
मोहनजोदड़ो का आवारा मसीहा	58
पैदल इतिहासकार: कलकत्ते की गलियों का सच्चा आशिक	64
इतिहास खतरे में है - ऑड्रे ट्रुशके	70

भूमिका

यह किताब इतिहास विषयक उन आलेखों का समुच्चय है, जिन्हें अमर उजाला और नवभारत टाइम्स के संपादकीय और संडे स्पेशल पृष्ठों पर जगह मिली। वे लेख एक जगह पर पाठकों के लिए उपलब्ध हों, यह किताब इसी मंशा का परिणाम है।

मेरी बुनियादी पढ़ाई इतिहास में हुई, फिर जीवन कई और रास्तों की तरफ मुड़ गया। इतिहास कभी पूरी तरह छूटा नहीं, न छूट सकता है।

अकादमिक की बजाय आम जन के लिए सहजता से इतिहास कही जाय, इन लेखों के पीछे यही खयाल रहा है।

असीम प्रेमादर सहित,

दुष्यंत

इतिहास की लोकप्रियता का स्वर्णयुग !

भारत का लिखित इतिहास ऋग्वेद से शुरू होता है, इससे पहले की सिंधु सभ्यता के लिखित साक्ष्य आज भी सर्वमान्य रूप से पढ़े नहीं गए हैं, यानी उसकी लिपि अबूझ है, कुछ दावे और कोशिशें रही हैं, पर उनमें से किसी भी दावे को सर्वस्वीकृति या आदर नहीं मिला है। तो ऋग्वेदकाल से लेकर आज तक यानी लगभग 5 हज़ार साल में शायद ही कभी इतिहास का एक विषय के रूप में ऐसा स्वर्णकाल रहा हो, जैसा हमारे समय में महसूस हो रहा है। इतिहास में लोकरुचि अच्छी बात है, पर बिना किसी औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षण -प्रशिक्षण इतिहास को खारिज करने, बदलने की छटपटाहट वैसी ही है कि चाकू हाथ में आते ही कोई भी सामान्य व्यक्ति खुद को सर्जन मानने लगे और ऑपरेशन थिएटर में घुस जाए।

इसे एक तथ्य और तर्क की तरह मान लिया जाए तो कोई हर्ज नहीं है कि भारतवर्ष गुरुकुल परम्परा का देश है, डिग्रियां पश्चिमी प्रभाव या अंग्रेजों के काल में आई। पर किसी विषय में विद्वता हासिल करने के लिए कई सालों के गुरु सानिध्य की अहमियत तो गुरुकुल परम्परा मानती ही है। आधुनिक शिक्षा संस्थानों, शोध संस्थानों को हमने गुरुकुल की जगह ही तो प्रतिस्थापित किया है।

इतिहास लेखन, इतिहास पठन- पाठन, मायथोलॉजी, ऐतिहासिक कहानियों से अलग है, तो इतिहास की लेखनसम्मत समझ श्रम और समय साध्य प्रक्रिया है। कोर्ट का एक हालिया मामले में याचिकाकर्ता से यह कहना कि जाओ, पहले इतिहास की पढ़ाई करके आओ। बहुत मानीखेज है, नीमहकीम केवल चिकित्सा के पेशे में ही जानलेवा साबित नहीं होते, इतिहास के नीमहकीमों की चूकें कई पीढियां भुगतती है, वह एक देह की मुक्ति के साथ समाप्त नहीं हो जाती।

ताजमहल के तेजो महालय होने या न होने की बहस को हम ज़ेरे बहस नहीं लाएंगे, यह थिअरी देने वाले पीएन ओक ने हिन्दू नज़रिए से इतिहास के कई प्रश्नों को देखा है। उनकी एक दर्जन से ज़्यादा ऐसी थिअरीज खास राजनीतिक गलियारों में गूंजती रहती है। पिछले कुछ समय में उनकी चर्चाएं फिर होने लगी हैं। सवाल अब भी यक्ष प्रश्न की तरह अडिग है कि क्या इतिहास की एकेडमिक दुनिया अब पुरुषोत्तम नागेश ओक को इतिहासकार मानने लगी है? उनकी मेथडोलॉजी और शोध के स्रोत क्या उन्हें इतिहासकार सिद्ध करते हैं?

यकीनन पीएन ओक साहब कॉन्सपिरेसी थियरिस्ट तो माने जाने के लिए सुयोग्य हैं, और उन्हें चर्चित से आगे ख्याति प्राप्त भी कहा जा सकता है, पर विचारणीय बात है कि भारतीय इतिहास लेखन के राष्ट्रवादी स्कूल का भी कोई शिक्षित, प्रशिक्षित इतिहासकार उन्हें इतिहासकार मानता होगा, मुझे घोर संदेह है।